International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 5, July-August 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

उपन्यास 'गायब होता देश' में आदिवासी जीवन

अंजलि

शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सार

'गायब होता देश' उपन्यास विस्थापित होते. टूटते-बिखरते और लगातार गायब होते जा रहे आदिवासी समाज की समस्याओं की कहानी है। रणेन्द्र के पहले उपन्यास ष्लोबल गाँव के देवताष् से इस उपन्यास में फर्क इतना सा है कि यहाँ असुर आदिवासी समाज की कहानी है तो यहाँ मुण्डा आदिवासी समुदाय है।

How to cite this paper: Anjali "Tribal life in the novel 'Gaiab Hota Desh'" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-5, August 2022, pp.750-752, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd50546.pdf

IJTSRD50546

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

मूल लेख

उपन्यास की मुख्य कहानी पत्रकार किशन विद्रोही की डायरी में दर्ज उनकी जीवन कहानी से शुरू होता है। इस डायरी का बड़ा और प्रासांगिक हिस्सा मुण्डा आदिवासी समुदाय के जीवन के खुशहाल कम और बदहाल अधिक रंगों से रंगा है। इस तरह मुण्डा आदिवासियों के दुःख दर्द की कहानी ही उपन्यास की विषयवस्तु है। आदिवासी समाज के शोषक ष्दिकुओंष् और आदिवासी गरिमा की पहचान उनकी मुंडारी भाषा से लेखक करता है ष्दिक मेद चि सेता मेदष् (दिकु और कुत्ते की नजर एक जैसी होती है)।

मुंडा समाज में महिलाओं का सम्मानजनक स्थान रहा है। लेखक इस बात को बहुत महत्व देता है-रम ओड़ो जाती दोतन को दो कुड़िको गे, (धर्म और जाति की रक्षा स्त्रियाँ करती है।)

उपन्यास के बारे में मैत्रेयी पुष्पा का कथन है आधुनिक विकास की तमीज के हिसाब से रातों रात गुम हो जाती बस्तियों के बाशिंदों की दर्दनाक दास्तान जिन पर कागजी खजाना तो बरसाया गया लेकिन पांव तले की धरती छीन ली। ष्उपन्यासकार में मुंडाओं के ऐतिहासिक विद्रोहों, तमाड़, विद्रोह, कोल सरदारी लड़ाई बिरसा ष्उलगुलानष् को बार-बार प्रसंगवश यादकर इनके प्रति सम्मान प्रकट करता है और नेपथ्य में कहीं न कहीं यह स्वीकार करता है कि जब तक मुंडा अपने ढंग से लड़ते रहे, अपने लिए कुछ पाते रहे मगर आजादी के बाद आदिवासी केवल लड़े हैं. मरे हैं। आजाद भारत में इनके संघर्ष को न सम्मान मिला है न उनके हक मिले हैं।

"अब वह दिन दूर नहीं कि उद्योगपतियों उद्यमियों को सफलता की कहानियाँ अखबारों की हेडलाइन बनेगी। ब्यूरोक्रेसी, लेजिस्लेशन की विफलता गांव-गरीबी- बदहाली के किस्से बहुत हो गए। लोकनायक का स्वर्गवास हुए दशकों बीत गए। आप जैसे लोग वहीं खड़े कदमताल कर रहे है और आपको अपनी मेहनत का भ्रम भी है कि आपकी ही क्रांतिकारी लेखनों से समाज बदलेगा। खुमारी से निकलिए नहीं तो दुनिया आगे निकल जाएगी, आप वहीं कदमताल करते रह जाएगे।"[1]

बदहाल जिन्दगी गुजारते समुदाय को मुख्यधारा द्वारा भी उपेक्षित किया जा रहा है। झारखण्ड के आदिवासियों की समस्या गम्भीर है। उसका निवारण करने की सरकारी नीतियाँ भी. आदिवासियों के लिए दमनकारी साबित हो रही है। उनकी जमीनों का अधिग्रहण आज भी जारी है। ष्झारखण्ड में 1950 के बाद से अभी तक 22 लाख एकड़ जमीन खरीदी गई है जिसमें 15 लाख आदिवासी बर्बाद हो गए। ये भूमण्डलीकरण की नीतियां जब से लगी है और पोस्को और जिंदल यहाँ आए है, 10 लाख आदिवासी विस्थापित हो चुके हैं अपनी जमीनों से।"[2]

उपन्यास के माध्यम से लेखक आदिवासी यथार्थ को उनके साथ हो रहे शोषण, दमन को केन्द्र में रखकर उनकी सच्चाई को सामने लाया है। आदिवासी समुदाय जिनको पहचान के नाम पर वनवासी जगती कह दिया जाता है। आज भूमण्डलीकरण के दौर में उनका निवास, जंगल खतरे में है। आज विकास के नाम पर उनका विस्थापन किया जा रहा है शोषण दमन की परिस्थितियाँ

पैदा की जा रही हैं इससे आदिवासी जीवन को न केवल स्वायता, राष्ट्रीयत और सामूहिकता संकटग्रस्त हुई है बल्कि उसके अस्तित्व पर भी प्रश्न चिन्ह लगता जा रहा है। आदिवासी जीवन आज न केवल पुनः आन्दोलित है बल्कि वह अपनी सामाजिक अस्मिता के अन्वेषण के साथ अपनी क्षरणशील संस्कृतिक पहचान बनाने की भी चिन्ता से भरा हुआ है। इसी वजह से आदिवासी चेतना का साहित्य भी लिखा जा रहा है. दूसरी ओर हिन्दी औपन्यासिकता में भी आदिवासी अस्मिता पहचान और संघर्ष को अभिव्यक्त करने की कोशिश दिखाई पड़ रही है।

लेखक का पहला उपन्यास ष्लोबल गाँव के देवताष् असुर समुदाय का इतिहास प्रस्तुत करता है। जिसमें लेखक ने एक जगह पर अब तक असुरों के बारे में जनमानस में बनी धारणा पर प्रहार करते हुए लिखा है कि ष्सुना तो था यह इलाका असुरों का है, किन्तु असुरों के बारे में मेरी धारणा थी कि खूब लम्बे - चैड़े, काले-कलूटे, भयानक दाँत - वाँत निकले हुए माथे पर सींग-वींग लगे हुए होंगे लेकिन लालचन को देखकर सब उत्तर-पुलट हो रहा है।"[3]

प्रसिद्ध कथाकार रमेश उपाध्याय ने ष्गायब होता देशष् के बारे में लिखा है कि - ष्यह उपन्यास भूमण्डलीय यथार्थवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है।"[4] इस उपन्यास में मुंड़ाओं के लाखों वर्ष पुराने इतिहास को दिखाया गया है। मुंडाओं के वर्तमान को अतीत से जोड़ने के साथ-साथ विषय से जोड़ने के लिए लेखक उपन्यास के प्रमुख पात्र सोमेश्वर के माध्यम से कहता है।ष् इतना तो तय है कि लेमुरिया समुद्र में प्रकट हुआ पुनः समुद्र में डूब गया, लेकिन नये युग के उदय के साथ यह पुनः प्रकट होगा।

इस उपन्यास में वर्तमान व्यवस्था विकास के नाम आदिवासियों की इन उन्नत, सुन्दर और टिकाऊ सभ्यता संस्कृति को समूल नष्ट करने पर तुली है। देशी विदेशी कारपोरेट, बिल्डर, भू माफिया, मीडिया, खदान कम्पनियाँ और केन्द्र तथा राज्य सरकार सभी आदिवासियों की जमीने, जंगल और जल हडपने, उनके पहाड़ों में छिपी सम्पदा को लूटने तथा उन्हें मार-पीटकर उजाडने और दरिद्र बनाने पर तुले हुए है।[6]

बांग्लादेश के युद्ध में शानदार प्रदर्शन कर राष्ट्रपति के हाथों वीरचक्र प्राप्त करने वाला बहादुर मुंडा परमेश्वर पाहन सेवानिवृत्त हो अपने गाँव एदलहातु आता है और देखता है कि एक बड़ी कम्पनी ग्रीनन एनर्जी द्वारा दुलमी नदी पर बाँध बनाकर मुण्डा गाँवों को डुबों देने की योजना शुरू हो रही है। वह विस्थापन विरोधी आंदोलन शुरू करता है। इससे नाराज भ्रष्ट व्यवस्था पहले उसे नक्सलवादी घोषित करती है और एक रात पुलिस के हाथों उसकी हत्या करवा दी जाती है। इसके बाद विकास और विस्थापन के नाम पर जंग शुरू होती है। भ्रष्ट पुलिस इंस्पेक्टर के0 वी0 पी0 मुंडा, ग्रामीणों के हाथों मारा जाता है। पुलिस आदिवासियों के गाँवों को नक्सलवादी गाँव घोषित करती है और एतवा मुंडा, संजय जायसवाल, अमरेन्द्र मिश्र, जैसे निर्दोषों को नक्सलवादी घोषित कर एक -एक कर मारती रहती है। आखिरकार दुलमी नदी पर बड़ा बांध बनता है और उसमें 117 गाँव और पचास मॉल में फैले खेत, जंगल दूब जाते हैं।

आदिवासियों की जमीन, उनके घर, गांव के गांव कारखाने, खदानों, बांधों, अभयारणों के नाम पर सरकारों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा हडपघ लिए गए। विरोध करने वाले आदिवासियों को नक्सलवादी घोषित करके मुठभेद में मार दिया गया। महिलाओं के साथ बड़े पैमाने पर अत्याचार हुआ। लाखों लोग भूखे-प्यासे और बीमारियों से मर गए बाकी लोग शहरों-कस्बो की झुग्गियों में नारकीय जीवन जीने को अभिशप्त हो गए।

आदिवासी समस्या पर लिखने वाले लेखकों ने अब तक ज्यादातर केवल ग्रामीणों के हालत को विषय बनाया है। रणेन्द्र ने गाँव में विस्थापित होकर शहरों की झुग्गियों में आ बसे आदिवासीयों की त्रासदी को भी सामने रखा है। इक्यावन छोटे- छोटे अध्यायों में विभाजित (और अधिकतर किशन विद्रोही की डायरी की शक्ल में) उपन्यास के पहले अध्याय में ही (गायब होता देश) शीर्षक के नाम से सूत्र की तरह बात स्पष्ट हो जाती है। ष्सरना वनस्पति जगत गायब हुआ, मरांग बुरु बोंगा, पहाड, देवता गायब हुए गीत गाने वाली धीमी बहने वाली, सोने की चमक बिखेरने वाली, हीरों से भरी सारी नदियाँ जिनमें ष्इकिर बोंगाष्, जल देवता का वास था। गायब हो गई मुंडाओं को बेटे-बेटियाँ भी गायब होने शुरू हो गए, सोना लेकन दिसुम गायब होने वाले देश में तब्दील हो गया।

अब जिस पूंजीवादी आधुनिकता की वकालत की जा रही है वहीं आज का जादूगर है उसी के काला जादू का परिणम है कि आदिवासी समाज तेजी से विलुप्त हो रहा है। वर्चस्व की मानसिकता की वजह से एक ओर तो आदिवासी जीवन-दर्शन और संस्कृति को हमेशा हेय की दृष्टि से देखा गया, वही दुसरी और उनकी जमीन, उनका जंगल, उनका जीवन सब एक-एक कर विकास की भेंट चढ़ा दिया गया। उनकी जमीन पर कल-कारखाने और बड़े-बड़े उद्योग बन रहे हैं मॉल बन रहे हैं, लेकिन इस जमीन के असली हकदार विकास की चमक में दफन हो रहे हैं।ष् इस आधुनिकता की विडम्बना यह है कि इस पर राष्ट्रीय जश्न मनाया जाता है। उपन्यास में राजनीतिक और प्रशासनिक मिली भगत से किस तरह से झारखण्ड में भू माफियाओं ने आदिवासियों की जमीन को कब्जाया और किस तरह जमीन हाथ से निकलते ही आदिवासियों को पहचान मिट गई. इसका बारीकी से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। आदिवासियों की जमीन से बेदखली, उनकी प्रताड़ना और धार्मिक सांस्कृतिक रूप से उन्हें उपनिवेश बनाना, इन सभी बिन्दुओं पर लेखक न केवल गंभीर बहस प्रस्तुत किया है बल्कि आदिवासी जीवन-दर्शन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता भी व्यक्त किया है।

ष्सोने के कणों से जगमगाती स्वर्ण किरण-स्वर्ण रेखा हीरों की कोध से चैंधियाती शंख नदी सफेद हाथी श्यामचन्द्र और सबसे बढ़कर हरे सोने, शाल-सखुआ के वन। यही था मुंडाओं का सोना लेकन दिसुम।

इन्हीं सखुआ के झुरमुट में सरना माई का निवास, जिनकी पूजा मुंडे करते हैं। प्रकृति के प्रति एक आभार-कृतज्ञता न होते, हरियाली न होती तो प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कैसे होती? प्राण वायु कहाँ से आती? जीव जगत का अस्तित्व कैसे आता?[7]

उपन्यास में जंगल का हरापन है तो उजडती बस्तियों का सन्नाटा भी है। साजिश और अपराध को अंजाम देती मानसिकता है। सामान्तर संघर्ष करने वाली प्रतिरोधी और मानवीय क्षमता भी है। ईसा के सैकड़ों वर्ष पूर्व जब मुंडा यहाँ पधारे, तो जंगल को जलाकर खेती की जमीन तैयार की, लेकिन वनस्पतियों के प्रति कृतज्ञता कम नहीं हुई, और बडी। गाँव के छोर पर वन का एक हिस्सा पवित्रा के घेरे से बाँध दिया। उस घेरे में आए सारे पेड़-

पौधे, लता, गुल्म पूजनीय और आदरणीय हो गए। ये सरना स्थल कहलाए।8

निष्कर्ष

विकास के नाम पर विस्थापित आदिवासी समाज का दर्दनाक आख्यान है षायब होता देशष् उपन्यास। विस्थापित आदिवासी को कभी नक्सलवादी के नाम पर मुठभेड़ में मार दिया गया और महिलाओं के साथ बड़े पैमाने पर अनाचार हुए लाखों लोग भूख प्यास और बीमारियों से मर गए। बाकी लोग शहरों कस्बों की झुग्गियों में नरकीय जीवन जीने को अभिशप्त हो गए। आदिवासी पुरुष रोजगार के लिए शहर में भटकते हैं और स्त्रियाँ बढ़ी बड़ी कोठियों में पोछा करती है। युवा लड़के नरा और अपराध में दूब जाते हैं और लड़कियाँ मजबूरन यहाँ वहाँ अपमानित, शोषित होती है।

संदर्भ सूची

[1] रणेन्द्र, गायब होता देश, हिंदी का प्रथम संस्करण, पेंगुइन बुक्स इंडिया 2014, 120-121

[2] वीर भारत तलवार, भारतीय राष्ट्र और आदिवासीए ूूू.कमइंजमवदसपदम.बवउ पृ. .5

[3] रणेन्द्र, ग्लोबल गाँव के देवता, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली पृ. 11

[4] सं0 लीलाधर मंडलोई, नया ज्ञानादेय, जुलाई 2014, अंक-137, पृ0-110

[5] रणेन्द्र, गायब होता देश, हिन्दी का प्रथम संस्करण, पेंगुइन बुक्स इंडिया 2014, पृ0-131

[6] सं0 लीलाधर मंडलोई, नया ज्ञानादेय, जुलाई 2014, अंक-137, पृ0-110

[7] रणेन्द्र, गायब होता देश, हिन्दी का प्रथम संस्करण, पेंगुइन बुक्स इंडिया 2014,पूर्वकथन, पृ0-1

[8] रणेन्द्र, गायब होता देश, हिन्दी का प्रथम संस्करण, पेंगुइन बुक्स इंडिया 2014, पूर्वकथन, पृ0 1-2